DEPARTMENT OF EDUCATION

B S N V P G COLLEGE

Charbagh, Lucknow

B A SEM- (II)

PAPER-II (History of Indian Education;post independence)

Name of the Teacher- Manjul Trivedi

unit-(III) Lecture -1 **Reading time-40 min.**

प्रिय विद्यार्थियों पिछली कक्षाओं के दौरान हम इकाई-1 के अंतर्गत भारतीय संविधान की प्रस्तावना, संविधान में निहित शैक्षिक प्रावधान तथा पाठ्यवस्तु में निहित सभी प्रकरणों का पूर्ण अध्ययन कर चुके हैं। साथ ही इकाई-2 के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा तथा उससे सम्बन्धित समस्त पाठ्यचर्या का अध्ययन भी हम नियमित कक्षाओं के अंतर्गत कर चुके हैं। विगत कार्यदिवसों में हम इकाई-3 के अंतर्गत माध्यमिक शिक्षा का अध्ययन प्रारंभ कर चुके थे तथा तत्सम्बन्ध में सामान्य जानकारी भी प्राप्त कर चुके हैं। प्रस्तुत लिखित लेक्चर की श्रृंखला के माध्यम से हम पुनः इकाई-3 से अध्ययन प्रारंभ करेंगे।

इकाई-3 के लिखित लेक्चर के अध्ययन के साथ ही हम--

1- माध्यमिक शिक्षा के अर्थ तथा स्वरुप को समझ सकेंगे।

2- माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य तथा महत्व को समझ सकेंगे।

3- माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न आयोगों/ समितियों के सुझावों को जान सकेंगे।

4- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) को समझ सकेंगे।

5- माध्यमिक शिक्षा में विविधीकरण एवं व्यवसायीकरण को समझ सकेंगे।

माध्यमिक शिक्षा

पिछली कक्षाओं में हमने पढ़ा की कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है जिसमें कक्षा एक से पांच प्राथमिक शिक्षा तथा 6 से 8 तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक अथवा पूर्व माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। प्राथमिक शिक्षा के पूर्ण होने के साथ ही माध्यमिक शिक्षा प्रारंभ होती है। आधुनिक शैक्षिक संरचना के अंतर्गत कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है।

कक्षा 9 से कक्षा 10 की शिक्षा को निम्न माध्यमिक शिक्षा एवं कक्षा 11 तथा कक्षा 12 की शिक्षा को उच्च माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। कक्षा 9 से कक्षा 12 तक चलने वाली माध्यमिक शिक्षा का प्रारंभ प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति पर होता है तथा उच्च शिक्षा से पूर्व यह समाप्त हो जाती है शिक्षा आयोग 1964 में भी माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया गया था यह दो भाग निम्न माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा के उपरांत ही बालक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करता है माध्यमिक शिक्षा स्तर के प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा स्तरों के बीच में स्थित होने के कारण भी इसकी महत्ता बढ़ जाती है।

माध्यमिक शिक्षा के अत्यधिक महत्वपूर्ण होने के तीन प्रमुख कारण हैं। प्रथम- माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है मानव विकास किशोरावस्था से संबंधित होने के कारण तथा भावी युवा शक्ति के नेतृत्व के प्रशिक्षण का प्रथम केंद्र होने के कारण माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। द्वितीय-माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवन यापन के क्षेत्र के प्रवेश का द्वार खोलती है एवं किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है।

तृतीय- विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा केंद्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी माध्यमिक शिक्षा करती है। वस्तुतः उच्च शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा एक आधार का कार्य करती है। स्पष्ट है कि इन तीनों ही दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा स्तर देश की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

माध्यमिक शिक्षा के महत्व के कारण ही इसे शिक्षा रूपी जीवन की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। जिस प्रकार से रीढ़ की हड्डी मनुष्य के संपूर्ण शरीर को संभाले रहती है ठीक उसी प्रकार से माध्यमिक शिक्षा भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को संभालती है यदि माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता श्रेष्ठ होती है तो प्राथमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा भी गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होती है। परंतु जिस देश की माध्यमिक शिक्षा गुणात्मक दृष्टि से कमजोर होती है उस देश की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था ही कमजोर हो जाती है। अतः राष्ट्र की सुदृढ़ता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा कर्म की एक मजबूत कड़ी हो।

शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का बहुत महत्व है, क्योंकि इससे छात्र उच्च शिक्षा के लिए और दुनिया में कार्य करने के लिए तैयार होते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण और वैश्विकरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में तेजी से हुए परिवर्तन तथा जीवन सतर को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने की आवश्यकता के मद्देनजर यह जरूरी है कि प्रारम्भिक शिक्षा के आठ वर्षों की अवधि के मुकाबले स्कूल शिक्षा पूरी करने वाले छात्रों को ज्ञान और कौशल में ऊँचा स्तर प्राप्त हो क्योंकि माध्यमिक शिक्षा पूरी करने का प्रमाण-पत्र रखने वाले की औसत आमदनी उस व्यक्ति से ज्यादा होती हो, जो केवल आठवीं कक्षा तक पढ़ा हो।

मुदालियर आयोग (1952-53) ने माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा के दौरान कहा था कि नागरिकों की आदतों प्रवृत्तियों एवं चारित्रिक गुणों के विकास में शिक्षा को योगदान करना चाहिए जिससे वे प्रजातांत्रिक नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकें तथा उन ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का विरोध कर सकें जो व्यापक राष्ट्रीय तथा

धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधक हों। आयोग ने शिक्षा के द्वारा चारित्रिक गुणों के विकास, राष्ट्रीयता व धर्मनिरपेक्षता की प्रगति तथा राष्ट्र की उत्पादन शक्ति में वृद्धि की आवश्यकता को ध्यान में रखकर माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताएं-

1-प्रजातांत्रिक नागरिकता का विकास करना।
2- व्यावसायिक कुशलता का विकास करना
3-व्यक्तित्व का विकास करना।
4-नेतृत्व का विकास करना।

कोठारी आयोग (1964-66) ने कहा था कि राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा को इस प्रकार से विकसित करना आवश्यक है कि उत्पादकता में वृद्धि हो सामाजिक व राष्ट्रीय एकता बढ़े, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तेज हो तथा सामाजिक-नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना हो। आयोग ने शिक्षा को व्यक्तियों के जीवन की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं से जोड़ने की आवश्यकता पर भी बल दिया जिससे शिक्षा सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में विकसित हो सके इसलिए कोठारी आयोग ने शिक्षा के निम्नांकित चार राष्ट्रीय लक्ष्य बताए थे-

1-शिक्षा को उत्पादन से जोड़कर आर्थिक विकास को बढ़ाना।
2-शिक्षा के द्वारा सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना।
3-शिक्षा के द्वारा आधुनिकीकरण की गति को तीव्र करना।
4-शिक्षा के द्वारा आध्यात्मिक सामाजिक व नैतिक विकास करना।

अतः स्पष्ट है कि माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करके शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण को बढ़ाकर राष्ट्रीय विकास व एकीकरण को सुनिश्चित करना है सामान्य शिक्षा का अंतिम सोपान होने के कारण माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा के द्वार खोलती है तथा रोजगार व जीवनयापन के क्षेत्र के लिए

तैयार कराती है उस माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य जहां एक और छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए तैयार करना होना चाहिए वहीं दूसरी ओर छात्रों को जीविकोपार्जन के लिए भी तैयार करना होना चाहिए।